

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly
Magazine

Issue
18

Year
2

Volume
6

March 2014
Chandigarh

Page
24

मासिक पत्रिका
Subscription Cost
Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

bZoj i kFkZk

दूर अज्ञान के हों अन्धेरे,
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम,
जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।।



vKku dksnjvdj usd hi kFkZk bl fy; sd hxbZgS
Dakd vKku nqkdkeyvd kj. kgA Kku dhj kskuh
nsisdhbl fy; si kFkZkd hxbZgS Dakd Kku l qk
dkeyvd kj. kgA Kku dkl hkk vFkZgSt ksi nkFZ
t SkgSm soSkght kuukA bl hrjg vKku og gS
t ksf geat ksi nkFZt SkgSm soSkghu t kuus
nA; g vKku ghgksgSft l dsd kj. k ge <kh
ckcdskhoku l e>usyxrsgA bl hrjg Kku gh
geabZoj dsBhd : lk dksckdj kFkZkQjA l s
cprk kgA feF; k Kku dk njvgkgh nqk dk
fuokj. kgA It is rightly said , there are no eyes that
see like knowledge.

mi fu"kn ea, d dFkud vkrkgSt c ; KKloyD,
l UK vkle dsi fr i or gkdj viuhifru; ka
eSsho dkr k uhdscp viuhl E vZ E fr dk
foHkx dj nssgarkseSsh; KKloyD, l si Wrh
gS&D, k/ku edr dkl kku gA; KKloyD, dgrs
gS&/ku edr dkl kku rksugray fdu re viuk
thou l qki nZ ; kiudj l dkhA bl ij eSsh
dgrhgS& g /ku rksD, k; g l kkl akj Hheqs
fey tk sro Hheavej ugkgkd dkhAeqsrkst ks
Kku vki dsi k gSoghpkfg; AvKk ; g gSd Kku
euq dhl c l scMh' kDr vKj l c l scMkxguk

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher &
Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

gA

fi Nyseghusvk Zl ekt dsl hFki d vkS
egku l ekt l dkd l UK heg"KZLohhn; kuh
dkt ue fnol FkA mudst hou dkms; Fkl R
rd igokuk vkS m l R dksykard igokuk
vFkZ Kku dki z kj rdhyk ukuki z kj dsnoka
l Sndkj kkdj vkuh dkt hou th A Kku dk
nwj kule l R Hh gA bl hl R dksykard
igokuk d sfy; smgks vk Zl ekt dhLFki ukd ho
m d sm's' ksdscr ksd sfy; svk Zl ekt ds10
fu; e cuk A

fuEu nksfu; e Kku dksykard igokuk d sfy; s

vk Zl ekt dhd fVc/kr kd kn' kZ gsgs

1 l R dkszg. kdjusvkS vl R dksNk used nS
r Skj jga

One should always be ready/ inclined to embrace truth and divorce what is not truth.

2 vfo| kvFkZ vKku dks[Re dj vkS fo| Kku
dki z kj dja

It should be our foremost duty to dispel ignorance of those who suffer because of ignorance and they should be given the most valuable gift of knowledge.

Vastness of sky can be seen only in the open

We want to see the vastness of sky without leaving our room. We live a part of the whole and that part is our position, ego, status and mental barriers. This is the one reason we fail to enjoy this beautiful God gifted life as a human being. Solution lies in coming out of the self created cage.

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चेक या कैश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, **IFC Code - ICIC0006592**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

; fn vk cA eat ekaugradj ok l drsrks
di ; k at par dk pA Hs nA

Editorial

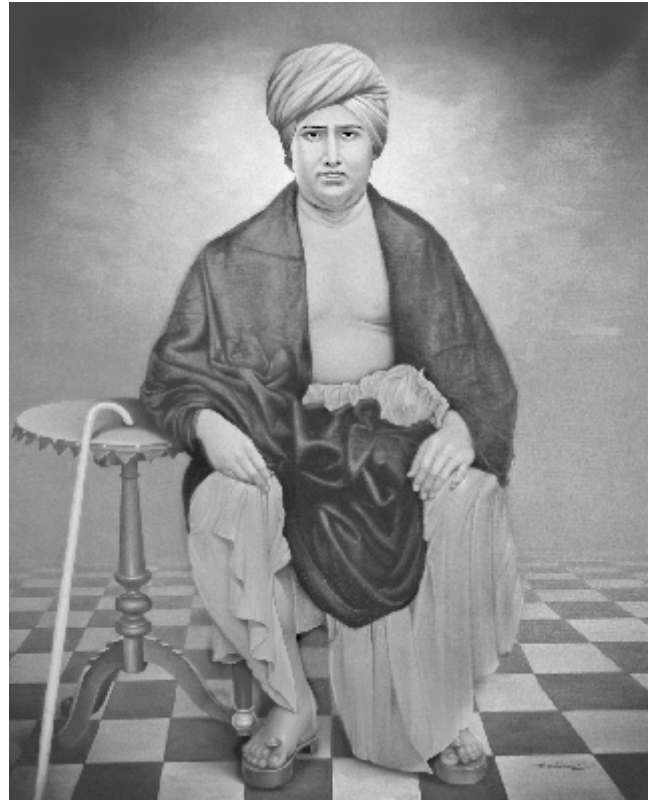
Religion for social renaissance

Mahatma Vidur says in Niti shataka----whether people shower adulations or condemn them, whether their act gets them wealth, name and fame or not, whether they live hundred years or die today itself in their pursuit, a few people never renounce the path of righteousness in their mission. Maharishi Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj was one such character..

When Swami Dayanand Saraswati, after acquiring knowledge of Vedas, started his crusade against profaned form of Vedic religion, the condition of Indian society was abominable, especially in the context of women and low castes. Vested interests in Hindu religion had misused Vedas and other religious texts, by resorting to interpolations and wrong interpretation, to create an unequal society. He proved that the Vedanta being practiced then was diametrically opposed to the spirit of the Vedas. He trampled underfoot the orthodoxy which prohibited study of Vedas by women and dalits and declared that the teaching of Vedas transcended barriers of sex, caste, faith, religion and geographical boundaries. He believed that the four Vedas were the repository of knowledge having germs of all sciences. To a query why God gave Vedas, Swami Dayanand replied that when the merciful God had created air, water, plants, fruits, rivers, mountains, minerals etc. for the enjoyment and happiness of his subjects, how could He----the bestower of perfect happiness, the embodiment of all knowledge----have left out revealing the knowledge to use these unto them to realize *dharma, artha, kama and moksha*, the ultimate goal of human life. And Vedas are all about this knowledge.

To him, truth was the master word of Vedic teachings--truth in the soul, truth in the vision, truth in the intention and truth in the act. Arya was a man of superior principles and character and Arya Samaj which he founded was an assembly of good people. The Samaj postulates in principle equal justice for all men together with equality of the sexes. It repudiates a hereditary caste system and only recognizes profession as the basis for classification of society into Brahmins, Kshatriyas, Vaishns and dalits.

According to Swami ji, there is one God who is omnipresent and omnipotent, the Creator and Sustainer of this Universe, unborn, just and merciful. He has no image and since He is all-pervasive, He could be felt



within and one could reach Him by meditation. He believed that the ignorance was the cause of all miseries and it was the duty of every Arya to annihilate gloom of ignorance by burning a candle of knowledge.

He believed in looking at the world as a one unit in the spirit of Vedic Sukti-*Vasudhaiva Kutumbakam*- entire world is one family. Best summarized in principles of Arya Samaj- *“the prime object of the Arya Samaj is to do good to the world, that is, to promote physical, spiritual and social good of every one.”*----*“no one should be content with promoting his/ her well being only; on the contrary, one should look for his/her well being in promoting the well being of all”*.

He proclaimed very strongly that one has not to stick to any dogmas even if inherited from the people of wisdom. Once such beliefs fail to withstand the supremacy of reasoning and truth in the light of new revelations, these should be parted with, best manifested in this principle of Arya Samaj-----*“one should always be ready to accept truth and to renounce what surfaces as untruth”*

। अक्षर;

वेदों के अनरूप ही हिन्दु धर्म का सम्मान सम्भव है

आज हम कदम-कदम पर हिन्दु धर्म का जो अपमान देख रहे हैं या यूँ कहे कि यह धर्म दूसरों के लिये एक मजाक बन कर रह गया है, उसके जिम्मेवार हम खुद हैं। दूसरों को दोषी ठहराना गलत है। यदि हम शराब और मांस अपने भगवानों को चढ़ाएंगे, अपने भगवान को मानव या पशु का रूप देकर अश्लील मुद्राओं में दिखाएंगे या भगवान कहे जाने वाले महान पुरुषों को कामुक मुद्राओं में दिखाएंगे और उनके बारे में ऐसी मनघड़न्त कहानियाँ सुनाएंगे जो की आचरण विहीन हों तो हिन्दु धर्म का हर कोई मजाक ही उड़ायेगा, जैसा कि आज हो रहा है और होता आया है।



पहले हमें यह बात समझनी होगी हिन्दु धर्म कोई धर्म नहीं। आज के समय में यह एक पहचान हैं।

भारत में रहने वालों का मूल धर्म वैदिक धर्म था यानी कि जिस धर्म की वेदों में बात की गई है। धर्म और ईश्वर का गहरा सम्बन्ध है। ईश्वरीय गुण ही धर्म हैं। यह ईश्वरीय गुण हैं सत्य बोलना, सद्व्यवहार करना, धैर्य, सहनशीलता, किसी से द्वेष, ईर्ष्या व घृणा न करना, परोपकार करना, अपने काम को ऐसे करना जिससे दूसरों को सुख पहुँचें आदि, जिनको जीवन में धारण करने से मनुष्य स्वयं तो सुखी बनकर उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होता ही है साथ ही अन्य प्राणियों को भी सुखी बनाता है।।

इसी तरह वेदों में ईश्वर का स्वरूप है ——— ईश्वर एक है न कि अनेक जो निराकार, अजन्मा, सर्वान्तरायी व सर्वशक्तिमान जिसका न कोई आकार है न-ही जन्म होता है, वह कण कण में समाया हुआ है, वह हमारे अन्दर भी है, बात सिर्फ अन्दर झाँकने की है।

यह इस देश का दुर्भाग्य कहें कि हमारे वैदिक धर्म से खिलवाड़ करने वालों को खुली छूट मिली रही। यह खिलवाड़ करने वाले और कोई नहीं, धर्म से जुड़े पण्डित पुरोहित ही थे। संस्कृत जानने का अर्थ था वेदों में लिखी बातों से खिलवाड़ करने का खुला लाईसेंस। वे अपने

दूसरे धर्मों की आलोचना छोड़कर पहले अपने धर्म को बुराईयो से दूर करना होगा

स्वार्थ के लिये वेदों में लिखी बातों को तोड़ते मरोड़ते रहे। जिन विचारकों ने ऐसे विकृत रूप को नहीं माना उन्होंने नये मत बना लिये जैसे कि जैन, बौद्ध, सिक्ख धर्मों का प्रादुर्भाव होने का कारण ही वैदिक धर्म का विकृत रूप था। हालत यह हो गई कि साँप की पूजा करने वाला भी हिन्दु है और, राम की पूजा करने वाला भी। एक बात स्पष्ट है कि आज 98% हिन्दु न तो धर्म को वैदिक स्वरूप के अनुसार मानते हैं और न ही ईश्वर के स्वरूप को वैदिक धर्म के अनुरूप निराकार और अजन्मा मानते हैं। ऐसे में आज हम कदम-कदम पर हिन्दु धर्म का जो अपमान देख रहे हैं या यूँ कहे कि यह धर्म दूसरों के लिये एक मजाक बन कर रह गया है, व उसके जिम्मेवार हम खुद हैं। हर किसी धर्म और मर्यादाओं की जब अवहेलना होती है तो उस धर्म को मानने वाले लोग सड़को पर उतर आते हैं। परन्तु हिन्दु धर्म में ऐसा कुछ नहीं, कारण कोई मर्यादा है ही नहीं। हर बात हिन्दु धर्म को उदार कह कर ढक दी जाती है।

पिछले 2000 सालों में पहली बार एक व्यक्ति हिन्दु धर्म के पाखण्डों को विरुद्ध खुलकर मैदान में आया और वह था महर्षि दयानन्द सरस्वती। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने 1947 तक समाज में फैले अज्ञान और

अन्धविश्वासों को दूर करने में बहुत जबरदस्त काम किया परन्तु देश की आज़ादी के बाद आर्य समाज रास्ते से व अपने उद्देश्यों से भटक गया परिणाम आज देश में कोई संस्था ऐसी नहीं जो हिन्दु जाति को ठीक रास्ता दिखा सके।

आज अगर हम चाहते हैं कि हमारा हिन्दु धर्म आदर के योग्य बने, बाहर की दुनिया इसका मज़ाक न उड़ाये, हिन्दु भी अपने धर्म में वैसे ही गौरव अनुभव करे जैसे मुसलमान इस्लाम में करते हैं, या ईसाई क्रिस्चियेनटी में करते हैं तो

- 1 हिन्दुओं को ईश्वर का स्वरूप वही मानना होगा जो कि वेदों में है अर्थात् ईश्वर एक है उसके गुणों के आधार पर बहुत से नाम हैं पर मुख्य नाम ओम् है, जो निराकार, अजन्मा, सर्वान्तर्यामी व सर्वशक्तिमान जिसका न कोई आकार है नही जन्म होता है, वह कण कण में समाया हुआ है, वह हमारे अन्दर भी है, बात सिर्फ अन्दर झांकने की है। जब ईश्वर का हम कोई आकार ही नहीं दिखायेंगे तो कोई उनको अश्लील रूप भी नहीं दे सकता। न होगा बांस न बजेगी बांसुरी।
- 2 महान पुरुष को ईश्वर का स्थान न दें।
- 3 ऐसे धर्म गुरुओं से दूर रहना जो कि अपने आप

को भगवान बताते हैं।

- 4 धार्मिक आयोजनों में कर्मकाण्ड व दिखावा कम से कम करें, उसे गरीब से गरीब व्यक्ति भी कर सके। कर्मकाण्ड धर्म में व्यापार को लाता है और धर्म का स्वरूप बिगड़ जाता है।
- 5 आपकी भाँक ऐसी हो कि अनपढ़ व्यक्ति भी धर्म की बात समझे, उसे ऐसा न लगे कि यह तो विद्वानों के लिये ही है।
- 6 धर्म की बात इतने सरल ढंग से हो कि साधारण व्यक्ति भी उसे समझे, न की उसको पंडितों का पल्लु पकड़ना पड़े
- 7 सेवा को धर्म का मुख्य अंग बनायें। सेवा के बिना धर्म अधूरा है।
- 8 मनोरंजन को भक्ति से अलग रखें। ध्यान व शान्ति का वातावरण भक्ति के लिये आवश्यक है।

यहां यह समझना आवश्यक है कि वेदों के मन्त्रों के अर्थ पण्डितों ने अपने स्वार्थ के लिये अलग-अलग ढंग से किये हुये हैं। अधिक संस्कृत के विद्वान तो यह कहते हैं कि साकार जन्म लेने वाला ईश्वर और मूर्ती पूजा वेदों में कही गई है। यह देश का सब से बड़ा दुर्भाग्य है। इस लिये हम वेदों के उसी स्वरूप को माने जो कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बताया है।

7CsXcellency

WELCOMES : Professionals, Entrepreneurs, Corporate to avail of Mentoring and Coaching Professional Service for the excellence in all important areas of life



Service is provided by a highly qualified and Experienced Professional.....

Please Call Now to Schedule a Free Introductory Session

Vighnaharta CHS, Shop No. 2, Plot No. 36/37, .

Near Seawoods Clinic, Sector 50 Old, Seawoods, Nerul W

Ajay Goyal, +919004428416, +919967018416 info@7csxcellency.com

ajaygoyal@7csxcellency.com, Web Site: www.7cs-xcellency.com

ge vi usev d ksd Sst kus

mōzh xlsy



I ā kj ear hu pht scgq evyoku
gāD kēd ; g i h q d h d i k d s
fcuk i ā r ughagkshā i gyh gS
ekuo dk pky k ntwj k fuH
gskv k i vZ: lkl svi usvki
dks LorU egl w djuk o
r h j k t hou esfn' k n s s o k y k
Kku oku xqA bu ea i gyh

pht &&v FkZ ekuo dk pky k feyusd ki z k u Hh
vl Oy gkst kr kgSt crd m dsi kl cld hnk pht a
ughagkshā

, d clj xq ukud nō dspysusmul si Wk fd
ekuo t hou dkeV D kgā xq ukud nō usm s
l e>kusdsfy; sm s, d cgveV ghj k fn; kvkS
d gkfd og i rkdj dsvk sfd bl dkeV D kgā

Pg kghj ky d j ckt kj ear pykx; kvkS vyx vyx
nd kunkj kēd kfn[kusy xkA i gy sog Oy cpusoky s
dsi kl x; kA&&&& gshkzbl ghj sdscny s e eqs
fdrusi Snsd drsgkA Oy okysusd gkfd ear ēga
bl dscny sear hu l s nsnā m dscn og ghj s
dksl ā hcpusoky sdsi kl ysx; kA&&&&&eā
r ēga ghj sdscny si kēd fykVekVj nākl ā hoky s
usd gA nym st cfd l husn kēd og evkZ ghj sdh
dher dkeV, kēd u l ā hvkS Oy cpusoky sl s
djok jgk gS rksm usm svi usi kl cgdj
d gk&& gshkzbl ghj sdh dher dkl gheV, kēd Oy
oky k; kl ā hoky kughā j l drkA bl dsfy; s ēga
t kghj; kēd si kl t kukp kfg; ā

lkgy st kghj husghj sdh dher 20000: lk avkēd j
ntw sus30000 v kS fōj , d us50000 gt kj A bl l s
og v kS Hhvl eā l esi Mx; kvkS m hō fdr ds
i kl fōj l sx; kAm usm s d [kl t kghj hdkuke
l qk k t ksf d u dōy 'kghj dkl c l scMkt kghj h
Fk cYdh v FNsvk pj. k dsfy; sHh t kuk t krk
Fk&&&&og r ēgaxyr ughacr k xkA m dscn
r ēgaf d l hvkS dsi kl t kusdht: jr ughagkshā

Tlc m hō fdr usog ghj km t kghj hdkfn[k k rks



og t kghj hm sn kēd j gSkuj g x; kvkS m hō fdr
l scy k&&&&bl ghj sdksd Hh u cpuk bl dh
d kZ dher ughagā; g veV gā m hō fdr us
vkdj tc; g xq ukud nō dkscryk krksog
ckg&&&&eū t hou Hhbl veV ghj sdhrjg
gā gS rks; g veV; ij cgd de yk bl d l gh
evy dskv k i ksgā

tc 1]86]000; kēd; kēd hckr dht krhgsvkS; g
d gk t krk gSfd eū t hou bruh; kēd; kēd s
xō j usdscn ghi ā r gskgS rks; g bl ckr dk
ghl d s nskgSd eū t hou fdr ukveV gā

tc bl ckr dkt ku fy; kfd eū t hou bruk
veV gsvkS eR qHhvo'; gā ft l dk Hh t lē
gō kgSog eR qkshhvo'; i ā r gskA; kuhfd
gj hō fdr dsi kl bl veV; ekuo t hou dsl gh
i z k dkcgg Fk k l e; gā, d fnu xō j x; krks
t hou dk, d fnu [kēd gsk; k v kS nēk sghn k r s

ekuo cpi u l scqk sesa zskdj t k kgA ft lqks
t hou dsoakæcrk sekZdsuqkj t h kgksgS
mudspgsij sij vflre l e; eal Ukk gksgSog
eR qdksthou dkl R t kudj pærs gA ij Uq
ft lqksisthou dseVv dksughal e>k gksgvls
bl dkl ghizkæ ughadjrsog i'prki eandkh
gksgSij m l e; i'prki djusdkdksZQk nk
ughagksA 'kj h f kFky gkspdk gksgA QfDr
pkg dj Hhd d djuseacsl gksgA eR qpkHk
gj i y vls r k kgA

rksD kau bl t hou dsgj , d {kdkkl ghizkæ
fd; kt k A; gr Hhl Hh gSt ceuq AeZsj krs
ij pyA AeZdkekæZog gSt ksl R vls U k dk

vkpj.k djokrk gA bl dseq; y{.k gAl R
ckukl nOogkj djukl ASZl gu'kyrk fdl h
l s}Sk bZ kZo ?k k u djukl ij ksdkj djukl
drK gksgvi usd le dks s sdjukft l l snwj k
dks qki gæv k fA

AeZ kj kvFkZ/FkZ /ku vls, so; Zdhi drhdjA
vls, s s/ku l sgh Hkædkl su djsA vFkZ
AeZ kj ki dr /ku l sght hou fuokZ djs

t c og , s k dj ækrksm dsfy; sekæ& t k
nqkæ sNmdj dj l nS vkuh esj [r kgSdh
i drh vo'; gkæA ; gh gSt hou dseq; dks
l e>ukvls m sBd <æ l st hukA

आर्य समाज 35—43 सैक्टर चण्डीगढ़ ने बहुत श्रद्धाभाव से महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस मनाया

एक ऐसी आर्य समाज जिसका अपना भवन भी नहीं है और विद्यालय के परिसर में ही चलती है, ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस बहुत श्रद्धाभाव से मनाया। सब से खास बात यह थी कि किसी वक्ता को नहीं बुलाया था बल्की उपस्थित श्रधालुओं ने वक्तव्यों, सुन्दर भजनो द्वारा अपने विचार प्रकट किये और श्रधांजली दी। बाद में जलपान हुआ।

आर्य समाजों में जितने भी पर्व देखता हूं यह सादगी भरा पर्व सब से अच्छा लगा। पर्व मनाने का तभी कोई अर्थ रह जाता है जब बच्चों से लेकर बड़ों तक का योगदान हो न कि किसी प्रोफेशनल

वक्ता और भजनोपदेशक को हजारों रुपये फीस देकर बुला लिया या किसी विद्यालय के बच्चे बुला लिये। यह अन्दोलन तभी आगे चलेगा जब आपके बच्चे हिस्सा लेंगे और आप भी

किसी को कोई आर्य समाज की बात सुनायेंगे। सुनते सुनते तो बूढ़े हो गये। कितनी बार उन्ही बातों को सुनेंगे। बात तो तब है कि हम भी किसी को यह सुनी हुई बातें सुना दें। कम से कम घर से ही शुरुआत कर लें। अगर घरवाली और बच्चों को भी न सुना सके तब तो अपने आप को आर्य समाजी कहना बन्द कर दें।

इसी तरह आर्य समाज सैक्टर.—27 ने हकीकत राय बलीदान दिवस बहुत अच्छी तरह मनाया। श्रीमति ईश्वर देवी जो कि आर्य समाज सैक्टर.—7 की मन्त्राणी है हकीकत राय के बलीदान दिवस पर बहुत सुन्दर व्याख्यान दिया।

खुश रहने के लिये पिछली अप्रिय बातों को भूलकर वर्तमान में रहें।

एक बार एक महिला वक्तवय दे रही थी, उसने एक चुटकला सुनाया, जिसे सुनकर सभी श्रोता ठहाके मार कर हंस दिये। कुछ देर बाद उस महिला ने वही चुटकला फिर सुनाया, श्रोता हंसे पर पहिले जैसे नहीं। कुछ देर बाद उसने फिर सुनाया तो श्रोता हंसने की बजाये एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

महिला वक्ता हंसी और बोली—“ अगर आप चुटकले पर बार बार हंस नहीं सकते तो अपने दुखड़ों पर क्यों बार बार रोते हो। जिन्दगी में खुश रहने के लिये पिछली अप्रिय बातों को भूलकर, वर्तमान में रहें।

Small slim weddings

Neela Sood



Recently, we had a very pleasant and soul uplifting experience of attending a South Indian marriage in our old friends circle at Goregaon in Mumbai. Both bride and groom were IT professionals and well employed too. Their parents were also very highly placed. The marriage was on a Sunday and was arranged in a community hall. Time was from 10AM to 1 PM. Rituals of marriage started dot at 10AM and continued for two hours. Both bride and groom were in simple traditional attire. All male family members were in dhoti. Best part was that the couple and their respective family members participated in the rituals very piously. After the ceremony was over, bride and groom accepted compliments and pleasantries in same traditional attire. There were no designer dresses or hairdo or any beautician to prepare them for the special day. No snacks, chat, cold drinks or coffee were served. Yes, there was drinking water.

At 12.30 sharp, we were requested to move for lunch. We were seated on simple tables coupled with wooden chairs. Around 250 guests from both sides partook of the food that was served on banana leaf. The food course comprised eight dishes. We ate to our heart's content and relished every delicacy, being served by individual men, in steel buckets with serving spoons. They'd ensure that one has as much as one wanted but not for leaving behind on plate. After lunch, every guest was presented with a special Ladoo packet and an idol of Ganesha.

While returning with another Punjabi friend in his car, we were in a thoughtful mood. Overwhelmed by the sheer simplicity of what we had seen, we were busy mulling over the big fat Punjabi wedding. In the last decade, we have noticed how even choosing the wedding venue in North India has become a big issue. A few invites take you 25 Km away from the town for the two hours ceremony and others settle for a star hotel. The ceremony is generally in the night and you're lucky if the 'barat' arrives by 11Pm. By then most guests have

loaded themselves with snacks chat etc with the result, by the time food is served you indulge yourself just to spoil a plate. Many don't mind leaving behind a lot of unconsumed food. Generally, you are back home after mid night and that hangover remains the next day. Those who don't have a car should forget about being social.

In the North, the wedding ceremony is performed past midnight when even most of the close family members are yawning and struggle to remain awake with puffy eyes. Very few attach any importance to the ritual part



though best priest is engaged and most auspicious timing is selected. Both groom and bride are seen least inclined to what priest chants in a language which only he can understand. Entire attention is on clothes, hairstyle, make up and photographer.

Point is if 'idli dosa' can travel from South to North why not these beautiful customs whose aroma is more pronounced than that of 'sambore'. We all pose ourselves to be the champions of woman equality but it can happen only when we walk the talk by making marriage ceremony a simple affair. These flowery words, "We don't want anything except that our guests should be taken care of well and venue should be good" have greater burden on girl's parents than the old time dowry. At least those things given in dowry were helpful to the boy and girl to start their new phase of life but here every thing goes in to air like a smoke. Please think over.

हमारे स्वयं के हित में है जल व अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग

सीताराम गुप्ता,



कुछ दिन पहले एक विवाहोत्सव में जाना हुआ। भव्य आयोजन था। खाना शुरू करने से पहले हाथ धोने के लिए पानी की तलाश की लेकिन कहीं पर भी पानी नहीं रखा गया था जहाँ सुविधापूर्वक हाथ धोए जा सकें। सब कुछ था सिवाय पानी के। पानी कहीं किसी जग या टंकी में उपलब्ध नहीं था लेकिन पानी की

बोतलों व गिलासों का प्रयोग करना न केवल पर्यावरण के लिए घातक है अपितु इस्तेमाल करने वाले के लिए भी अस्वास्थ्यकर है इसीलिए प्लास्टिक के उपयोग को हतोत्साहित किया जाना अनिवार्य है।

आज हर जगह प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों में बंद पानी को प्रोत्साहित किया जा रहा है। आज प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों पर कहीं भी कोई रोक-टोक नहीं। प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों में बंद पानी के प्रयोग को

प्लास्टिक की बोतलें जरूर रखी थीं। 200 मिलि लीटर पानी से लेकर दो लीटर पानी तक की प्लास्टिक की बोतलें पर्याप्त संख्या में कई काउण्टरों पर सजी थीं। जिसको हाथ धोने होते वो सुविधानुसार हाथ बढ़ाकर कोई एक बोतल उठाता, ढक्कन की सील तोड़ता और हाथों पर कुछ पानी डालकर शेष पानी से भरी बोतल वहीं रखे बड़े-बड़े टबों में फेंक देता।

टबों में ही नहीं चारों तरफ़ ढेर लगा था आंशिक रूप से प्रयुक्त पानी की बोतलों का। उनमें से निकल-निकल कर पानी चारों तरफ़ फैल रहा था और कीचड़ भी हो रही थी। आजकल जहाँ जाओ कमोबेश यही स्थिति दिखलाई पड़ती है। पानी और पीने योग्य पानी का ये हथ्र देखकर जी दुखी हो जाता है। क्या पानी की इस बर्बादी, इस अविवेकपूर्ण उपयोग को रोका नहीं जा सकता? क्या हाथ धोने के लिए सामान्य स्वच्छ जल टूटी लगे जग अथवा टंकियों में उपलब्ध नहीं कराया जा सकता? यह असंभव नहीं लेकिन इसके संभव न होने के पीछे कई कारण हैं जो भयंकर हैं।

पेय जल का तो दुरुपयोग होता ही है साथ ही प्लास्टिक की बोतलों का भी बेतहा इस्तेमाल किया जा रहा है। हाथ धोने हैं तो एक बोतल, कुल्ला करना है तो दूसरी बोतल, भोजन के बीच में पानी पीना है तो तीसरी बोतल, भोजनोपरांत हाथ साफ़ करने हैं या पानी पीना है तो चौथी व पाँचवीं बोतल।

.....इस तरह एक आदमी के लिए पाँच-सात बोतलों की सील तोड़ना व उनमें उपलब्ध पानी की क्षमता का अत्यल्प प्रयोग अथवा दुरुपयोग करना सामान्य सी बात है। प्लास्टिक की



प्रतिष्ठा का प्रतीक या स्टैंडर्ड माना जा रहा है। प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित यूज एण्ड थ्रो पात्रों को प्रतिष्ठित किया जा रहा है। एक-एक फंकान में कई-कई टैपों या ट्रक भरकर प्लास्टिक की पानी की बोतलें व गिलास तथा प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित यूज एण्ड थ्रो पात्र प्रयोग में लाए जाते हैं। फंकशन खत्म होते-होते इस घातक कचरे के ढेर लग जाते हैं। यह कचरा वज़न में अत्यंत हल्का होता है अतः इधर-उधर उड़ता-फिरता रहता है।

शहरों, कस्बों, गाँवों व समस्त पृथ्वी के सौंदर्य पर कलंक—सा यह कचरा सचमुच त्याज्य है। आज बड़े-बड़े शहरों में ही नहीं कस्बों और गाँवों तक में कूड़े का सही ढंग से निपटारा करना एक बड़ी समस्या हो गई है। कुछ आर्थिक व औद्योगिक विकास की आवश्यकता तथा कुछ बढ़ते बाज़ारबाद के कारण आज हमारे उपभोग की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है। वस्तुओं की संख्या और मात्रा दोनों में बेतहा बढ़ोतरी हो रही है। यूज एण्ड थ्रो संस्कृति के कारण तो स्थिति और भी भयानक होती जा रही है। बढ़ते औद्योगीकरण के कारण संसाधनों का अपरिमित दोहन किया जा रहा है जो हमारे परिवेश और प्राकृतिक संतुलन के लिए घातक है।

क्या प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित यूज एण्ड थ्रो पात्रों की जगह धातु, चीनी मिट्टी अथवा काँच के सुंदर व टिकाऊ, खाने-पीने

सुविधाजनक बर्तनों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता? क्या प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित यूज एण्ड थ्रो पात्रों की जगह प्राकृतिक सामग्री जैसे पत्तों से निर्मित पत्तल व दोनों का प्रयोग संभव नहीं? क्या पत्तों से निर्मित पत्तल व दोनों का प्रयोग परिवेश के लिए अनुकूल व सुरक्षित नहीं? क्या इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का सृजन संभव नहीं? क्या इससे प्रकृतिक संसाधनों के दोहन में कमी द्वारा औद्योगीकरण के दुष्परिणामों को कम करना संभव नहीं? क्या इससे अजैविक अथवा नष्ट न होने वाले कूड़े-कचरे के अंबार से मुक्ति संभव नहीं? कुछ भी असंभव नहीं यदि संतुलित दृष्टि व नेक इरादे से कार्य किया जाए।

क्या प्लास्टिक की बोतलों या गिलासों में बंद पानी की जगह टूटीवाले जगों या टंकियों में भुद्ध पेय जल उपलब्ध नहीं कराया जा सकता? कराया जा सकता है लेकिन दो सौ, तीन सौ या हद से हद पाँच सौ रुपये के पानी के बीस-पच्चीस हजार रुपये तो नहीं बनाए जा सकते। ये घोर बाजारवाद, औद्योगीकरण व व्यावसायीकरण का परिणाम है जिसके कारण लगभग बिना कीमत वाला पानी जैसा पदार्थ भी न केवल सौ गुना से ज्यादा कीमत पर बेचा जा रहा है अपितु पानी जैसे बेशकीमती पदार्थ की बर्बादी व प्रदूषण के स्तर में बेतहा वृद्धि हो रही है और लोगों के स्वास्थ्य से भी खिलवाड़ किया जा रहा है।

कई बार भुद्ध स्वच्छ जल अथवा मिनरल वॉटर के नाम पर जो बोतलबंद पानी परोसा जाता है वास्तव में वह पीने के योग्य भी नहीं होता। उसमें से न केवल दुर्गंध आती है अपितु कई बार खारापन अथवा स्वाद भी अजीब-सा होता है। भुद्ध स्वच्छ जल तो गंधहीन, रंगहीन व किसी भी प्रकार के स्वाद से रहित तथा पारदर्शी होता है। भुद्ध जल अथवा मिनरल वॉटर के नाम पर प्रायः बोतल में बंद पानी ही होता है जिसकी गुणवत्ता कोई भरोसा नहीं। कई बार सीधे ज़मीन का कच्चा

पानी जो पीना तो दूर अन्य प्रयोग के लिए भी उचित नहीं होता बोतलों में भर दिया जाता है।

कई बार बोतलबंद पानी इतना खराब होता है कि जो भी बोतल या गिलास खोलकर घूँट भरता है वह उसे गले से नीचे उतारने में असमर्थ होता है। वह न केवल भरी बोतल या गिलास डस्टबिन में फेंकने को विवश होता है अपितु मुँह में लिए पानी को कुल्ला करके बाहर फेंकना भी उसके लिए ज़रूरी हो जाता है। यह न केवल लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ है अपितु अनैतिकता व साफ़-साफ़ बेईमानी भी है। यह पानी का ही नहीं अन्य संसाधनों का भी दुरुपयोग है और प्रकृति व पर्यावरण के प्रति लापरवाही ही नहीं, गंभीर अपराध भी है।

देश में ही नहीं पूरे विश्व में पर्यावरण की स्थिति लगातार बदतर होती जा रही है। ऐसे में हमारे लिए अपने उपभोग को सीमित व नियंत्रित करना ही नहीं अपने उपभोग की दिशा को बदलना भी अनिवार्य प्रतीत होता है। यह हर तरह से हमारे हित में ही होगा। वस्तुओं का सही व संतुलित प्रयोग ही नहीं पुनर्प्रयोग भी समय की मांग है। जल का विवेकपूर्ण उपयोग तो और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। जल व अन्य संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग में ही निहित है प्रकृति का बचाव और पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति। यह तभी संभव है जब हम अपने व्यवहार के साथ-साथ अपनी मानसिकता को बदलकर उसे भी अधिकाधिक संतुलित व सकारात्मक बनाएँ।

ए. डी. 106-सी, पीतम पुरा, दिल्ली - 110034

फोन नं 095555622323

Email : srgupta54@yahoo.co.in

श्री सीता राम गुप्ता एक सुप्रसिद्ध लेखक हैं। यह इनका बड़पन्न है कि हमें हर मास अपना लेख प्रकाशन के लिये भेजते हैं। मुझे इनकी पुस्तक '**मन का उपचार**' पढ़ने का सोभाग्य प्राप्त हुआ। मैं यही कह सकता हूँ कि आप भी इसे अवश्य पढ़ें। यह बहुत लाभप्रद हो सकती है। सीता राम जी का टैलीफोन नम्बर सर्म्पक के लिये दिया हुआ है।

सीता राम जी वैदिक थोटस आपकी बहुत आभारी है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644

Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047

Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 **Name of Editor** : Bhartendu Sood

A matter of trust and conscience

Harish Dhillon

THE dictionary defines the word 'trust' as 'a firm belief or reliance on the strength, character and behaviour of a person.' By implication, trust is given and won after long years of positive experience between two individuals. Conversely, there would never be room for trust between two people who have had only negative experiences with each other. But there are enough exceptions to show that this is an over-simplification.

The Nawab of a small state in Punjab owned a beautiful cottage near one of the quaint railway stations on the Kalka-Shimla line. The family spent six months every year in this cottage and built up a strong and beautiful relationship with the station master and his family. There was total trust and faith between the two families. When partition took place, it was natural, and, perhaps, inevitable, that the Nawab should leave the cottage in the care of the station master. It was understood that when the situation normalised, he would come back and reclaim his property. The Nawab returned after 20 years to find that not only had the station master taken possession of the cottage, but had also, with the connivance of the revenue authorities, obtained legal ownership. He returned to Pakistan a broken hearted man.

On the outskirts of the city of Lyallpur lived Kharaiti Ram, who ran a small kiriyana shop. His neighbour, one Mohammad Rasool, also ran a kiriyana shop. Over the years, the business rivals became bitter enemies. They

did everything they could to harm each other and there was, of course, no question of any trust between them. At the time of partition, Kharaiti had to leave suddenly and urgently. The only person he met before his departure was Rasool. He asked him to look after his property and handed him the keys. But he came away with the certainty that Rasool would take possession of his house and his shop even before he had left the limits of Lyallpur.



LOVE
IS ABOUT
TRUST

Kharaiti never returned to Lyallpur, there was nothing for him to return to. But his son, like so many second-generation refugees, felt compelled to go back. You can imagine his surprise when Rasool, forgetting the long years of hatred and acrimony, not only welcomed him with open arms but also handed over the keys to both his father's properties.

The son couldn't help but voice his father's

apprehensions. Rasool smiled. "Yes, we hated each other, but how could I have faced my Maker on judgement day if I had violated your father's trust?"

The son sold both the properties and returned to India, a richer man, in more ways than one.

Trust is not merely a matter of long years of correctly placed faith. Often you lose it where you are sure of it and you find it

where you least expect to find it. It depends on how strong the conscience of the trustee is at the moment when this trust is put to the test -- and this is not always borne out by how strong it has been in the past.

Though the human being is superior to other animals in numerous ways, it is the human infant that is the most helpless when born. It is completely dependent for survival on its caregiver. The philosopher, Gabriel Marcel, has gone so far as to say that we know our existence only through our relationships with others. He has asserted that 'I know I am here because you are there responding to me.' A process that begins at the very start of life.

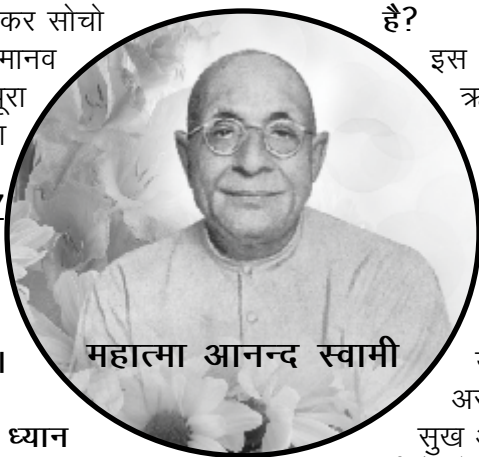
महात्मा आनन्द स्वामी की पुस्तको से कुछ अमूल्य बातें

बर्थ डे तो मनाये पर साथ ही जीवन की बैलेन्स शीट भी बनायें | यह रहट बन्द हो गया तो पानी भी बन्द हो जायेगा।

सागर में मिलने वाले नदियों का पानी कभी भी स्त्रोत की ओर वापिस जाते नहीं देखा गया, वैसे ही हमारी आयु के जो दिन बीत जाते हैं, कभी वापिस नहीं आते। बर्थ डे तो मनायें, जशन भी करें पर साथ ही अपने जीवन की हिसाब किताब भी करें।

बैलेन्स शीट भी बनायें। एकान्त में बैठकर सोचो

कि जिस उद्देश्य के लिये यह मानव शरीर मिला था, वह उद्देश्य कितना पूरा हुआ और कितना शक है। यदि उतना पूरा नहीं हुआ जितना होना चाहिये था, तो दृढ़ संकल्प करो कि आगामी वर्ष इस घाटे को पूरा करेंगे। उद्देश्य पूर्ती का एक ही साधन है, प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटा आत्म चिन्तन और प्रभु चिन्तन करो।



महात्मा आनन्द स्वामी

चीं-पी की चिन्ता छोड़ प्रभु में ध्यान लगायें

एक बूढ़ी माता जी मेरे पास आई और बोली, स्वामी जी मैं ध्यान में बैठती हूँ किन्तु ध्यान लगता नहीं। मैंने पूछा क्यों नहीं लगता? तो वह बोली —“ घर में बच्चे हैं, पोत पोतियां हैं उनकी चीं पीं समाप्त नहीं होती।

मैंने हंसते हुये कहा—“ परिवार में बच्चे होना तो अच्छा है, जिस घर में बच्चे नहीं होते वहां तो सन्नाटा छाया रहता है। उनकी चीं- पीं में ही अपना भजन करो। वह विश्वसत नहीं दिखी तो मैंने उसे एक कहानी सुनाई।

एक था घोड़े वाला। उसका घोड़ा चीं पीं की ध्वनि से बहुत बिदकता था। एक दिन घोड़े को पानी पिलाने के लिये एक कूए पर ले गया जहां रहट की चीं पीं की आवाज आ रही थी। घोड़े वाला इस डर से कि घोड़ा विदकेगा, यह सोच रहा था कि जब रहट बन्द होगा तब पानी पिलाउंगा।

तभी कूए वाले ने पूछा—तुम घोड़े को पानी क्यों नहीं पिलाते?

घोड़े वाला बोला जब चीं पीं वन्द हो जाये तभी पिलाउंगा।।

कूए वाला हंस कर बोला— जब रहट चलेगा तो चीं पीं होगी

इस लिए इस चीं पीं की चिन्ता छोड़ ध्यान लगाने बैठो। चीं पीं होती भी है तो होने दो। तुम्हारे मन में अगर प्रभु का प्रेम है तो इस चीं पीं के होते हुए भी तुम्हारा ध्यान लगेगा।

संसारिक व्यक्ति के लिये योगाभ्यास क्यों आवश्यक है?

इस का उत्तर महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि—भा”, भूमिका में इस तरह दिया है। योगी और संसारिक मनु”, जब संसारिक कामों में संलग्न होते हैं तो योगी का मन सदा सुख दुख से उपर उठ कर, आनन्द में प्रकाशित होकर, उत्साह और मस्ती में भरा रहता है। इसके विपरीत संसारिक व्यक्ति, जिसने योगाभ्यास नहीं किया होता, दुख और असफलता में बहुत दुखी हो जाता है, और सुख और सफलता में बहुत खुश। कहने का अर्थ है योगी संसारिक वृत्तियों से उपर उठ चुका होता है। जब कि संसारिक व्यक्ति वृत्तियों का दास होने की वजह से अंधकार में फंस कर दुखी रहता है। क्योंकि इस संसार में रहते हुए उंच-नीच, सुख-दुःख, रोग-स्वास्थ्य, समस्याएं—उलझने तो सब कुछ लगा रहना ही है, इसलिये संसारिक व्यक्ति के लिये योगाभ्यास, ‘ध्यान’ जिस का मुख्य अंग है बहुत आवश्यक है। योगी ध्यान द्वारा यह मालुम कर लेता है कि क्या उसके लिए ठीक है क्या गलत यदि गलत मार्ग पर चला भी जाये तो ध्यान द्वारा यह मालुम होने पर कि यह गलत है, उस को छोड़ देता है। जब कि जो योगी नहीं होता वह इस सोच में चिन्तित रहता है कि क्या करूं।

ऋषि, देवता या महात्मा कौन है?

ऋषि, देवता या महात्मा उन को कहा जाता है जो दूसरों का हित चाहने वाले हों। दूसरों के सुख, कल्याण के लिये बिना इसकी परवाह किये कि दूसरे उसके लिये क्या कर रहें हैं, चाहे कांटे ही विछा रहे हों, लगे रहते हैं। ऋषि, देवता या महात्मा उस बृक्ष की तरह होते हैं जो कि उस की टहनी को काटने वाले को भी छाया प्रदान करता है।

वृक्ष जैसे अपना फल आप नहीं खाते, नदियां अपना पानी स्वयं नहीं पीती, ऐसे ही देवता वह हैं, जो दूसरों के लिए जीता है। आवश्यकता पड़े तो दूसरों के लिए प्राण भी दे देता है।

देवता बनना तो मुश्किल है तो मनु"; कैसे बनें?

यह सत्य है कि देवता बनना तो मुश्किल है, ऐसे में हम मनु बनने । प्राणी मनु"; तभी बन सकता है जब वह संवेदनशील हो, दूसरों से वैसा ही व्यवहार करे जैसा कि वह दूसरों के द्वारा अपने लिये चाहता हो और जो दुखी हैं उनकी सेवा को अपना धर्म मानें । समाज सेवा, दुखी सेवा, लोक सेवा को अपना धर्म बना ले । कोई रोगग्रस्त है तो उसके पास जाकर पूरे यत्न से उसकी सेवा करे । यदि किसी गरीब का वच्चा साधनों के बिना शिक्षा से दूर हो रहा है तो उसकी शिक्षा का प्रबन्ध करें, पुस्तकें दिलवा दें, वर्दी सिलवा दें । अपने कार्यों

द्वारा प्यार के बीज बोओ । लोगों में मिलाप करवाओं ।

मनु"; मनुसे कहते हैं जो दूसरों के काम आए । जो केवल अपने लिये ही सोचता है, केवल अपने भले के लिये ही यत्न करता है । केवल अपने में ही सीमित है वह पशु है । खाना, पीना, सोना, डरना, सन्तान उत्पन्न करना, अनाज का संग्रह करना, अपने लिये रहने की जगह बनाना, दुख से दूर भागना, सुख के पीछे दौड़ना यह तो पशु भी करता है । मनु"; भी यदि यही करे तो उस में और पशु में क्या फर्क रह गया ।

विज्ञापन

; g i f=d k f' k {k oxZd si k t k h g S v k i m i ; Dr o j o / k p h r y k k f i z t u d k s j) k l e u] v i u s O k i k j d k s v k x s y s t k u s d s f y ; s ' k k & v ' k k l p u k f o k k i u } k j k n s d r s g a

i f=d k e a f n ; s x ; s f o p k j k s d s f y , y f k d L o ; a f t E e s k j g a y f k d k s d s v y k o k u - f n , x , g S U k f , d e l e y k s d s f y , p . M i x < + d s U k y ; e k u ; g a

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरुकुल, कांगड़ी, कामधेनु जल व अन्य आर्यवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

v x j v k i d k s d n d g u k g S ; k i f = d k s u b s c r i b e d j u h g s

d l ; k f u E u a d d r e s s i j l E d j a

H k j r b h q l n] 231 l S v j & 45-A, p. M i x M 160047

0172-2662870 9217970381 E mail : bhartsood@yahoo.co.in

Can governance be subservient to society transformation?

Bhartendu Sood

The General Elections to the 16th Lok sabha are round the corner. AAP with its spectacular performance in the Delhi assembly elections not only changed the configuration of political chess board, but its 49 days rule has thrown up a very sensitive issue for the political pundits to ponder over ----can governance be made subservient to society transformation mission, what looks to be the long nourished obsession with AAP's top leader and last CM of Delhi Mr Arvind Khejeriwal? In other words can you revolt against the system despite being the part it, as the governing head?



First we need to appreciate that good governance is like a heart in the body. If heart is working alright, blood reaches everywhere and chances of body breakdown are very rare. On the other hand, if the heart malfunctions, health break down is inevitable. It applies to every such unit which involves people, money and use of resources right from a small organization to a state/country. Even a small house needs good governance for prosperity and happiness in the sense that without good governance, even good earnings can turn a family in to a virtual hell. The five important pillars of good governance are—to have a set of rules and laws---known as constitution when it comes to a state or country, to stick to the framed procedures and rules while running the govt. or enterprise, delivery of justice according to the laws and constitution, to take care of the basic needs of the members/citizens for their physical, mental and cultural well being and the last being, protection of the members/citizens and of their rights, dignity and freedom. Undisputedly, rules and procedures have to be amended from time to time but there is always a right forum for that. It can not be achieved by restoring to street shows or anarchism. I give the example of a new CEO joining a company which provides livelihood to a few thousand employees.

It is quite possible that organization has corrupt and inefficient officers who have developed vested interests over a period of time and the new CEO is in the know of the things. No doubt, the directors and the promoters of the company would like the new CEO to make changes for the overall betterment but will not support him if such changes are not managed properly and the operations of the enterprise suffer or strike/lockout like situation develops. Second, he would be expected to do the things by following the well laid out procedures & due process and nothing of that sort that clashes with organizational goals, culture and values. Whether an organization or a country, even the most honest head has sometimes to put up with rotten apples and it is truer in the case of a highly diversified country like ours where caste and religious affiliations override the conduct of the leaders. In a nut shell, cleansing of the organization can not be made subservient to the governance. Other issues of governance like law and order, social harmony, communal harmony, respect of constitution, observance of laws and procedures in the discharge of duties, respect of international covenants and treaties merit equal importance. If these are ignored, implications can be catastrophic as one could see in Delhi in the last one month. But, then we should not forget that once the governance is good, corruption can not stay for a long.

जब मान ही लिया ईश्वर हमारे सभी पापों को माफ कर देता है तो नकली सोना चांदी चढ़ाने में भी क्या हर्ज?

आप हैरान न हों, अभी वैष्णो देवी मन्दिर में 198 किलो सोना व 81 किलो चांदी नकली पाए गये। कुछ मित्रों से बात की तो उनके जबाव इस प्रकार थे

जब मान ही लिया कि ईश्वर सब अपराध माफ कर देता है तो नकली चढ़ाने में क्यों हिचकचाना। इस अपराध को भी माफ कर देगा।

दूसरे ने कहा—यह भी क्या पता कि श्रधालुओं ने नकली चढ़ाया या भगवान के रक्षकों ने ही असली की जगह नकली रख दिया।

तीसरे ने महर्षिः कुल्लुहलः का सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा हुआ था उसने कहा—जिसने ब्रह्मांड की रचना की है जिस में यह सोना आदि सब पदार्थ शामिल है उसे ही आप यह सोना चढ़ाओगे तो इस से बड़ी मूर्खता और उस ब्रह्मांड की रचना करने वाले का इससे अधिक अपमान क्या होगा।



M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values'

You can not change the whole world but you can definitely make a small part of it a better place to live before you depart. Therefore, continue with your small-small acts without bothering for recognition or adulations. While living in this world, we all use so many things without paying anything—like air, water, Sun and beauty of flora and fauna, loving care of people around us therefore, it will be in the fitness of the things that we pay back with our benevolent acts, before we leave.



Founder of Sulabh
Shauchalya and
Social Reform
Movement

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

अच्छा हो मानव अपना भी सुधार करे

महेश पोरवाल

मानव अक्सर सोचता है कि जो भी उसके आस पास नज़र आ रहा है उसको बनाने वाला वह ही है। पुरातनकाल से आज तक जो भी परिवर्तन नज़र आता है वह मानव की सफलता की कहानी बयान करता है। कुछ सैकड़ों साल पहिले तक, यह भी पता नहीं था अमेरिका नाम का कोई देश भी है आज भारत में रहने वाला व्यक्ति अक्सर वहां घूमने जाता है। आज मानव चन्द्रमा तब पहुंच गया है और दूसरे ग्रह भी उसकी पहुंच के बाहर नहीं। उसकी भौतिक इच्छाओं को पूरा करने के लिये सब सुख सम्पत्ति है जो कि वह सौ साल पहले तक सोच भी नहीं सकता था। सौ साल पहले कभी किसी ने यह नहीं सोचा था कि आप चलते फिरते हजारों मील दूर अमेरिका में बैठे व्यक्ति से मोबाईल पर बात कर सकेंगे। पर इतना सब होने के बावजूद आज का मानव न तो सही मायने में प्रसन्न है और न ही वह सुरक्षित और निर्भय महसूस करता है।

आज का मानव अपने आस पास की सभी चीजों में तो सुंधार ला रहा है ताकी उसका जीवन और सुख मय बन जाये। उदाहरण के लिये, पहले पशु उसकी सवारी थे, फिर घोड़ा गाड़ी आई, उसके बाद रेल गाड़ी और आज वह वातानकुलित अपनी कार में चलता है। पर अच्यम्भे की बात यह है कि वह अपने आप को नही सुधार रहा। वह अधिक से अधिक स्वार्थी हो रहा है, लोभ उसके जीवन का अभिन्न अंग है, अपने पास सब होते हुये भी दूसरों की सम्पत्ति को हथियाना चाहता है, अपनी उन्नति में ही खुश है, दूसरों की उन्नति से उसे ईर्ष्या होती है। वह स्वयं से ही प्यार करता है और चाहता है कि सब उसे प्यार करें। उसे केवल अपने भविष्य की ही चिन्ता है। वह अपने आप को ही धोखा देने में लगा है।

अगर उसे ऐसी हालत से बचना है तो उसे अपनी आध्यात्मिक, मानसिक और शारिरिक हालत को सुधारना होगा। पर कैसे? क्या अधिक धन, हथियार और शक्ति का संग्रह करके? नहीं, यह तो उस के पास पहले से हैं। यह तभी सम्भव है जब वह संवेदनशील बने। अपने संग्रह से पहले दूसरों की जरूरतों को भी ध्यान में रखे। दूसरों के लिये त्याग का अर्थ है ईश्वर के प्राणीयों से प्रेम और यह उस प्रभु की सब से बड़ी पूजा है।

एक भक्त थे, बड़े प्रेम से ईश्वर को याद करते थे। एक दिन एक देवदूत आया, उसके पास नामों की दो सूचीयां थी। एक सूची में उनके नाम थे जो कि भगवान को प्यार करते थे। दूसरी सूची उन लोगों की थी, जिन्हें भगवान प्यार करता है।

भक्त ने देवदूत से पूछा कि क्या उस का नाम पहली सूची में है? देवदूत ने कहा कि आप का नाम सूची में सब से उपर है। प्रसन्न होकर उसने फिर पूछा क्या दूसरी सूची में भी उसका नाम सब से उपर है? वह यह जानकर बहुत हैरान हुआ जब देवदूत ने बताया कि दूसरी सूची में उसका नाम बहुत नीचे था और उसके अमुक पड़ोसी का सब से उपर था। भक्त ने आश्चर्य के साथ कहा —“ किन्तु वह तो भगवान का नाम लेता ही नहीं है। मैंने उसे कभी संध्या, पूजा, भजन, किर्तन करते हुए नहीं देखा। हां, वह दूसरों की सहायता करने, दूसरों के काम करने, बीमारों, गरीबों और दुखियों की सेवा करने में लगा रहता है।”

देवदूत ने कहा—“ यही कारण है कि भगवान उसे सब से अधिक प्यार करते हैं। जो भगवान के बन्दों को चाहता है, भगवान भी उसे चाहते हैं।

ऐसे लोग भगवान से क्या प्रार्थना करते हैं,

हे मेरे स्वामी, हे मेरे प्रभु, यदि आप मुझ से प्रसन्न हैं तो मेरी यह प्रार्थना है—“ मुझे राज्य नहीं चाहिये। मुक्ति का आनन्द नहीं चाहिये! एक ही इच्छा है मेरी कि दुखों से तपते हुए लोगों के कलकल हो जायें।

गीता में श्री कृष्ण कहते हैं कि अगर आप अनजाने में किये जा रहे पापों से बचना चाहते हैं तो दूसरों के लिये त्याग करें और परोपकार की भावना लायें। अगर आप स्वयं ही अपना कमाया धन भोगने लग पड़ेंगे तो याद रखीये भोग आप को भोगना शुरू कर देंगे और आप पापों से बच नहीं सकेंगे और उन पापों का फल भोगना पड़ेगा।

याद रखीये जो आन्तरिक खुशी, देने में, त्याग करने में है, वह लेने में नहीं या संग्रह करने में नहीं। उसी समाज में सुख शान्ति रहती है जहां अधिक सम्पन्न वर्ग कम भाग्यशाली लोगों के बारे में सोचता है और उनको उपर उठाने के लिये त्याग करता है। हमारा परिवार भी तभी तक परिवार रहता है जब परिवार के सदस्य एक दूसरे की खुशी के लिये त्याग करते हैं। जब यह त्याग की भावना समाप्त होना प्रारम्भ होती है, परिवार भी बिखरने लगता है। त्याग की भावना जोड़ती है और स्वार्थ तोड़ता है। यही नियम समाज और देश पर लागू होता है। इसलिये अच्छा होगा त्याग के गुण को हम जीवन में लायें।

A Marwari salesman

A keen immigrant Indian Marwari lad applied for a salesman's job at London's premier downtown department store - the biggest store in the world - you could get anything there.

The boss asked him: "Have you ever been a salesman before?"

"Yes sir, I was a salesman in India," replied the lad.

The boss liked the cut of him and said: "You can start tomorrow and I'll come and see how you do."

The day was long and arduous for the young man, but he got through it. And finally 6:00 PM came around. The boss duly fronted up and asked: "How many sales did you make today?"

"Sir, Just ONE sale," said the young salesman.

"Only one sale?" blurted the boss. "No! No! You see here, most of my staff make 20 or 30 sales a day. If you want to keep this job, you'd better be doing better than just one sale. By the way, how much was the sale worth?"

"93,30,05,34/- Sterling Pounds," said the young Marwari.

"What!!! How did you manage that?" asked the flabbergasted boss.



"Well" said the salesman, "This man came in and I sold him a small fish hook, then a medium hook and finally a really large hook. Then I sold him a new fishing rod and some fishing gear. Then I asked him where he was going fishing and he said down the coast. So I told him he'd need a boat. I took him down to the boat department and sold him that twenty-foot schooner with the twin engines. Then he said his Volkswagen probably wouldn't be able to pull it, so I took him to our automotive department and sold him that new Deluxe 4 x 4 Blazer.

I then asked him where he'll be staying, and since he had no accommodation, I took him to the camping department and sold him one of those new igloo 6-sleeper camper tents. Then the guy said, while we're at it, I should throw in about 100 Stlg. Pounds worth of groceries and two cases of beer.

The boss took two steps back and asked in astonishment: "You sold all that to a guy who came in for a fish hook????!"

"No" answered the salesman, "he came in to buy medicines for his wife and I said to him, "Sir, Your weekend's spoiled anyway, you might as well go fishing."

Boss: "You better sit in my chair.....!!!"

हंसना सेहत के लिये अच्छा है

उसकी पत्नी का अपहरण हो गया था । तीन दिन बाद अपहरणकरता ने कटी हुई उंगली भेजकर फ़रोती की रकम मांगी ।

पती ने कहा— उंगली से क्या होगा मुंडी भेज, मुंडी



पहली औरत— तुम्हारी बहु और दामाद कैसे हैं?

दूसरी औरत— बहु की क्या बात करूं, रोट लेट उठती है । मेरा बेटा उसके लिये चाय बनाता है, बहु घर का कोई काम नहीं करती, जब देखो बेटे से बाहर खाना खाने की फरमाईश करती है । ऐसी बहु किसी को न मिले ।

पहली औरत— और दामाद कैसा है?

दूसरी औरत— दामाद तो फरिश्ता है । रोज सवेरे मेरी बेटी के लिये चाय बना कर लाता है, वह तो आराम से उठती है । उसे घर का कोई काम नहीं करने देता और अक्सर बाहर ही खाना खाते हैं । ऐसा दामाद सब को मिले ।

जवान पति पत्नी में कुछ अनबन हो गई । पत्नि अपनी मां को फोन करती है—ममी, आज इन्होंने फिर मुझे डांटा, मैं आ रही हूं

ममी—बेटी इसे सबक देना ही पड़ेगा । तुझे आने की आवश्यकता नहीं । मैं तेरे पास रहने आ रही हूं ।

Contributed by Bharat Patel, Canada

धर्म-विचार

अशोक कुमार

रचो ना ऐसा मत, उच्च मत वालों, जो दे न सके कुछ मत,
मत दो संकल्प उस मत का, जिसमें नहीं कुछ तथ,
ताम-तामस न बने कोई मत, बस हित हर्ष का ही हो मत
लिप्त न हो अहंकार, स्वार्थ, घृणा से मत, उत्पीड़न रहित हो बस मत,
फंदा न बन जाये मत, रंग, रूप, रक्त के आवरण में न हो मत,
राग अलापे सत का बस, जात-पात का न हो मत,
पाठ पढ़ाये मानवता का, बस ऐसा चाहिए श्रेष्ठ मत।

मंदिर बनाना, कुछ हट के करना, कुछ ऐसा
बताना कि आप कोई विशेष मंत्र अलाप करें,
किसी प्रतिमा को प्रभु आकार देकर स्थापित
करना और प्रभु प्राप्ति के लिए साधना, भक्ति
आदि करना, जो कि धर्म की श्रेणी में नहीं
आता। धर्म तो अभूषित करता है दूषित नहीं।



धर्म शब्द “धृ” धातु से बना है, जिसका अर्थ है एक साथ रखना
अर्थात् धर्म-एकत्व स्थापित करता है। महाभारत में धर्म का वर्णन आता है
कि जो धर्म दूसरों के धर्म का बाधक है वह धर्म नहीं अधर्म है। चाणाक्य का
कहना कि लक्ष्मी, प्राण जीवन सब नाशवान है पर धर्म निश्चल है जो कभी
नष्ट नहीं होता और वही व्यक्ति का सच्चा साथी है और सम्पत्ति भी। गुरु
नानक अनुसार धर्म-जाति बन्धन, ऊँच-नीच, भेदभाव को समाप्त करता
है। समाज में कुरीतियों को समाप्त करना, मिल बांट कर खाना, धर्म कांड
से दूर रहना ही धर्म है। दयानन्द सरस्वति ने वैदिक धर्म का प्रचार,

धर्म-समाज के लिए स्तम्भ हैं। जब
किसी समाज में धर्म की अवेहलना शुरू हो जाती है तो समझो समाज में
असभ्यता आ गई, संस्कृति, साहित्य, मर्यादाएँ, परम्पराएँ लुप्त होने
लगती है। मानवता का वाष्पिकरण होने लगता है। तब विद्वान लोग फिर
से धर्म के महत्व पर बल देते हैं ताकी सुरक्षा, शिष्टाचार सुनिश्चित
किये जा सकें हैं। धर्म कमजोर और खोखले तब भी पड़ने लगता है जब
बल, छल, कपट, स्वार्थ का बोलबाला शुरू हो जाये और शोषण प्रवृत्तियाँ
ताण्डव करने लगे। इस प्रकार सिद्धांत, मूल्यों का ध्वंस हो जाता है,
आंधी नफरत की चल पड़ती है, क्रोध सुलगने लगता है, लोभ के दानव



धर्म का ठीक रूप — मदर टेरेसा

मत-मतान्तरों का खण्डन किया। उनका धर्म से अभिप्राय था - सभी आर्य
बनें अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्ति बनना और दूसरों से वैसा ही व्यवहार करना जैसे
व्यवहार की आप दूसरों से अपेक्षा करते हैं। दलाई लामा ने निष्काम सेवा
को धर्म कहा है।

सरल भाषा में धर्म का अर्थ है सत्कार, मान्यता, निर-विरोधता, तर्क रहित
अंधविश्वास, टिप्पणी रहित धारणाएँ आदि है। कर्तव्यता, कृज्ञता आदि भी
धर्म है। धर्म शब्द का अभिप्राय मानवता, धैर्य से भी जोड़ा जा सकता है।
धर्म में कुछ नीतियाँ, संयम, त्याग, आज्ञाकारिता, नियंत्रणता आदि लक्षण
हैं। धर्म वैदिक मर्यादाओं का मिश्रण है। साधारणतः लोग धर्म को धार्मिकता,
आस्था से जोड़ते हैं। धार्मिकता में उपासना, भजन, मूर्ति पूजन, कर्म काण्ड,



धर्म का विकृत रूप — आसाराम बापू

प्रबल हो जाते हैं। कुछ प्रभावशाली लोग, प्रबंधन, संचालन अपने हाथ में
ले लेते हैं और लालसा उच्च पद की बन जाती है। इस प्रकार स्थापित
धर्म टूटने लगता है। “मैं” “मेरा” शुरू हो जाता है, साम्प्रदायिकता
प्रबल हो जाती है, फिर मतभेद की स्थिति और नए समुदाय जन्म लेते
हैं। इस प्रकार धर्म-चक्र चलता है। विश्लेषण करें तो अक्सर धर्म
जातिया आधारित होता है। जातिय धर्म, परेशानी का परिणाम है। धर्मके
ठीक रूप को समझना ही इस का समाधान है। ऐसी स्थिति में धर्म के
मामले में पहले मतभेद होता है, फिर एकमत होता है।

धर्म का मुख्य उद्देश्य तो मानव का हित होता है पर अक्सर
धर्म के ठेकेदारों का स्वार्थ साथ में संलग्न होता है। हर कोई नायक बनना

चाहता है। इसी दौड़ में अनैतिकता का वायरस पैदा हो जाता है। अधर्म का सर्प फन फैलाने लगता है।

धर्म को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। एक अध्यात से जुड़ा है, दूसरा समाज से जुड़ा है। समाज से जुड़े धर्म में मानवता प्रभावित होती है, इसमें मानव, दानव पशु-पक्षी सभी समल्लित हैं। अगर मनुष्य केवल अपने बारे में सोचता है तो वह अल्प धर्म होता है जिसमें स्वार्थ, नैतिकता और कर्तव्य पालना के अस्वीकारिता होती है। अगर मानवता समाज का सोचता है तो वह पूर्ण धर्म बन जाता है। अध्यात से जुड़े धर्म में मुख्यता: व्यक्तित्व, व्यवहार सुधार होता है। ईश्वर भक्ति का मार्ग होता है, काम, क्रोध, मोह, लोभ अहंकार का विनाशक होता है। इसमें पूजा, पाठ, ध्यान, साधना, प्रभु मिलन, मोक्ष का मार्ग दर्शक और उपदेशक भी होता है। समाज से जुड़े धर्म में सामाजिक विकास, कल्याण, उन्नति, शांति का मार्ग दर्शक होता है। इसमें मुख्य सिद्धांत जीओ और जीने दो, प्यार बांटते चलो, मिल-जुलकर रहना सिखाता है। 'मैं' 'मेरा' छोड़कर 'हम' की धारणा ही आधार होता है। कर्म प्रधान होता है, इंसानियत ही धर्म होता है।

बुद्धिजीवियों का मत है कि कोई भी धर्म मतभेद, ऊँच-नीच नहीं सिखाता। यह तो मनुष्य ही है जो तंत्र, मंत्र, यंत्र, अंतर रचता है। शास्त्रों में अंकित है कि 'दूसरों के लिए जीना सीखो' उस पर पूर्णविराम है।

परन्तु यह भी सच्ची है कि धर्म के नाम पर मंदिरों में स्वर्ण धातु, धन एकत्रित होने लग पड़ा है। अब मन्दिर, कोष घर बन गए हैं। धर्म के नाम पर अब जल, जंगल, जमीन लुट रहे हैं। प्राचीन देवी धामों पर रचना बसना हो गया है। लोग चिकित्सा उपचार के लिए तरस रहे हैं, और देव मालोमाल हो रहा है, भगमा कुटुम्ब अब सत्ता में आ रहा है, उत्पीड़न, शोषण के समाचार आश्रमों से आ रहे हैं। धर्म बदनाम हो रहा है, धर्म का अभिप्राय आज अभिमान बन गया है। भीतर से वजूद खोखला हो गया है। अपने पेरों पर खड़े होने को मजबूर हो गया है। ऐसे धर्मों में अब आदमी पिस रहा है और धर्म की मादकता से ढका पड़ा है। हर कोई अपने आप को अति मूल्यवान, उत्तम समझ रहा है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि हर धर्म समुदाय युद्ध नहीं सहयोग, ध्वज नहीं एकात्मकता का सर्वोच्च और साक्षात मंदिर है, मनुष्य का हित ही धर्म है तुलसीदास जी ने कहा था कि

दूसरों का हित सोचना, दूसरों का भला करना सबसे बड़ा धर्म है, दूसरों को दुखी बनाना, पीड़ा देना, कष्ट पहुँचाना अधर्म है। धर्म की खोज में साम्प्रदायिकता से बचना होगा, साम्प्रदायिकता एक विष है।

इतिहास अध्ययन से पता चलता है कि राजा का धर्म था, प्रजा सेवा कल्याण सुरक्षा। प्रजा भी अपने राज्य, राष्ट्र की आभारी थी, सीमाओं की सुरक्षा, सम्पत्ति की सम्भाल प्रजा का धर्म था। धर्म पढ़ाना नहीं पड़ता है। भारतीय संत महात्माओं ने राष्ट्र, धर्म, उपासना, चरित्र का उपदेश दिया था, शायद यही धर्म था। समाज सेवा, देश सेवा का ही धर्म पढ़ाया जाता था। आज समाज सेवा का प्रचलन तो है, जैसे आश्रम निर्माण, लंगरगृह, चिकित्सा घर, पाठशालाएँ की स्थापना आदि। पर चिंता का विषय है राष्ट्रधर्म, और राष्ट्रीयता का आभाव, राष्ट्रीय धर्म तो है पर राष्ट्रीय भावना, देश प्रेम शून्य है। भ्रष्टाचार का दानव शक्तिशाली है। अगर देखें राष्ट्रीय धर्म की परिधि में क्या आता है? तो वह है सांस्कृति, सभ्यता, साहित्य, संशोधित सिद्धांत, स्वदेशिता, सदभावना, भारतीय प्राचीन शिक्षा प्रणाली परम्पराएँ आदि और देश प्रेम, आदर सुरक्षा करना। राष्ट्रीय धर्म से अभिप्राय है मैं 'मैं', 'मेरा भारत' प्रवृत्ति जगाना। कुछ जन आंदोलन सक्रिय हुए जिन्होंने राष्ट्रीय धर्म की अलख जगाई, कलंकित सोच को शुद्ध करने का प्रयास किया, ये सोचना कि देश रक्षा केवल सैन्य बलों का कार्य है को नकारात्मक किया। बाबा रामदेव ने कहा कि राष्ट्रीय धर्म प्रथम है और उसके पश्चात है व्यक्तिगत धर्म। राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देना राष्ट्रीय धर्म है, जो राष्ट्रीय सम्पत्ति लूटता है वह देश द्रोही है। आज अवश्यकता है मानव और राष्ट्रीय धर्म की। राष्ट्रीय धर्म का मुख्य लक्षण देश प्रति कर्तव्य-प्राण्यता और संगठन समृद्धि का सोचना, साम्प्रदायिक विवादों को तिलांजली देना और उच्च चरित्र का वातावरण निर्माण करना, नागरिकों की सोच को राष्ट्रीयता का आवरण पहनाना। एक ऐसा राष्ट्रीय धर्म का पदापर्ण करना जिसमें राष्ट्रीय हित प्रथम हो, 'मैं', 'मेरा' बाद में, इस प्रकार ऐसा धर्म जिसमें मनुष्य मनुष्य को समझ सके और स्वयं को ही देश अथवा राष्ट्र समझे।

उप-आबकारी और कर कमीशनर, सेवा निवृत्तद्ध, पंजाब।

मो. 98789-22336

bžkunkj hl sd ke dj usd sfy; sf k k k

bxy dhl j d k j vi uspgsgsy k k d si fr fuf/k k d k bžkunkj hl sd ke dj usd sfy; sf k k k n x hr k d h HkV/kp j d h /kVuk s d e g k b l f k k k d h [k k c k ; g g k h f d m l g a v F N s c p s x y r B d d k K k u f n ; k t k x k v k s ; g c r k k t k x k f d f d l i d k j o g v i u s v k i d k s k V y k k s c p k l d r s g a

bl d s f o i j h r H k j r l j d k j u s y k i k y f o / s d i k f d ; k g S k d h H k V j k t u s k o v Q l j k d s f o :) d n e m B k s t k l d a , d l j d k j r k s ; g p k g r h g S f d m d s d k u w d k s c u k u s o k y s Q f d r H k V / k p j l s n j v j g a n l j h r j Q H k j r d h l j d k j ; g e k u d j p y j g h g S f d H k V / k p j e a r k s f y l r j g a s g h i j m d s c k n m u d k s m d k [k e ; k t k H k j r u k i M a n k s k n s k k d h v i u h & v i u h l k p g S j Q d Z t : j g a

Eastern and Western way to understanding self

In Western philosophy, the term philosophy is often understood to mean love for knowledge. It is a predominantly intellectual exercise and deals mainly with man's relationship with the universe around him. Its focus is centered upon the outer world comprising forms of matter and motion, or the world as it is experienced by the five senses.

In contrast, Eastern philosophy does not use the word philosophy. In the hallowed tradition of Vedanta, the term philosophy is replaced by Brahma Vidya. Its focus is centered upon that knowledge that enables one to realize Brahman as the Self that pervades all. In this tradition, self-realization is the purpose of human life. This means that life has been accorded to human beings for the purpose of realizing their true identity.

This constitutes the major difference between the Eastern and Western traditions. In the former, the emphasis is on self-awakening, transcending the ego and the notion of 'I' and 'mine'. It is about engaging the world with a view to transcending it. In the latter,

knowledge of the world is sought to understanding man's status to the world he lives

Viewed in these terms, Vedas are the fountainhead of all wisdom. The wisdom contained in it not only helps us expand our minds but it also imparts practical lessons on how we can live our life to achieve Moksha, eternal bliss which is also the objective of human life according to Vedas..

In doing so, it helps us balance both our internal lives as well as the actions we ought to pursue in the external world. The idea lies in helping the aspirant develop equanimity of mind, internal tranquility and grasping the fundamental elements of the art, science and craft of performing our actions mindfully, skillfully and selflessly. Vedas have the germs of all sciences and nature and properties of matter and the soul are propounded in just accordance with what they really are. Only Divine creation could meet such lofty character.

v d s k Kku v / k k g S

t hou d h x g j k o z k a d s c l j s e s l k o r s j g u s l s
v P N k g s g e d e z j k k t h o u d k v P N k c u k a

, d c l j , d n k k u d d g h a t k j g s f s j k r i M x b z o
v d s s e s m l s j k r k u g r a f n [k o z n s j g k f k A b r u s e s
m u g a d c l y d f n [k o z n ; k j c l y d d s g l f k e s n h k f k
n k k u d d k d l e v k k u g l s x ; k A f k m h n j w x ; s f s d
n k k u d u s v i u h v k n r d s v u q j c l y d l s i n k —
, d c r c r k v s c s s r e g j s n h s e s j k s u h d g l a l s
v k h

c l y d { k k h i d s f y , l g e x ; k A N k k c P k D , k t k u s
, s s w i g l ; d k a i j n l w j s g h { k k l e h y x ; k A m l u s
O u e l j d j n h k c o k f n ; k o m n k k u d l s c l y k
c r k v k s t ; k s h d g l s x b z m l d s c n e s v k i d s i z u d k
t o l c n x k a v c n k k u d d s g e u s d h c j h f k A

n k k u d u s l k o k h h u f k f d , d N k k l k c P k h h
, s k i z u i w l d r k g s i z u u s m l d s v g e l j i j , d
p l y y x k n h f k A D , k O k n k b l i k f . M ; d k

n k k u d l k o u s
y x k v P N k u
g k x k c g o
v f / d l k o u s
d h o t k s f k k
l k o a d e z d j a
o o g k f j d
K k u d k c r
d j a



v k t v P N k u g l k g e l j s m i n s k d x . k H k o k u d s
c l j s e s x g j k ; k e s t k u s d h c t k s
v l e v k n e h d h k k e a l k s k l a d k s e u o c u u s d k
l a s k n A ; g r k s b h d g s f d e l c l y d j g e u s m l
n k k u d d h r j g v i u h i k f . M k o z r k s > k m y h i j
O k n k D , k t k s j k s k l a d h l e > e s u v k a e a d s
l a s k d k s g e J k s k l a d h k k e a c k y s r k s j k s k l a
d h : p h c u x h o j u k o s b l s l e ; d h c j c k n h l e >
d j o g l a t k s t g l a o g h c k s : p h d j < a l s c r k o z
t k a

i qt Ze & , d I PpkbZ

Mk egsk fol ky d k

fdl h xq dsnsf k; FkA , d usxq l si zu
i Wk&&^D kvki fi Nyst hou dscj seacrkl drs
gA^xq usdgl&&^gla^crkl drkgA^
nly s' k; usi Wk&&^D kvki vxyst hou dscj s
eacrkl drsgA^xq usdgl&&^gla^eShfo"; ds
ckj seahncrkl drkgA^mugksnksf k; kadks
l e>k k&&^fi Nyst hou dsvk k; ij rks; g
t hou feyk gA; fn fi Nyst hou es/ZeZo i q; u
fd; sgks\$ rksor Zku t hou bruki qh l qhj o l c
l k kuka l sl E l u d Ssfeyr k bl l sfl) gSfd
fi Nykt hou l qhj J S B o i fo= FkA or Zku t hou
cok; k&ksk i k j v /eZ scpkga kg\$ rksuf pr
gSfd vxyst hou eav FNh; k u i r gksA v l a;
t ho ukuk; k u; k&eat ksdeZy Hks j gsg\$ og
i qt Ze dkl cl scMki zekkgA i qt Ze dsdeZy
dsd k . kvl [a t ho ujd Hks j gsg\$ /eZdeZ
nku& i q; j i vki k vkn or Zku o vxyst l dks
l qk usd s f; sfd; st k rsgA i qt Ze dh Hkouki j
fo'ok dj rsgg gesor Zku t hou dksl Wky uk
l qk ukv k\$ m&kn Bkuk pfg; A bl heat hou dh
l FkZrk v k\$ m; k&rk gA t si r t hou dks
n&Zk\$ Q Z uksr Fk xYr d k&esx q j rsg\$ os
vxyst l&seafud "B; k u; kadksi r djdst l
t l&ajard n&k% d "V] v Hko vkn eaj rsgA
vr% qt Ze ges Wky u l qk usd kvol j nskgA

J S B deZdj rsgg t husdh bFNk djuk Hkjr h
t hon' k u gA ^ d qZusg dek k ft t ho' k s ^ gs
euq kl i j "k k k v k\$ deZhy cuka dek l seuq
n&rkcurkg\$ dek l sgheuq j k k cu t k rkgA
; g l a k j deZdh [kshgA t kst Sk cks kgSoSk
d k v r k gA t Sk cht oSk QyA t S h d ju h oSh
Hj u h A t ho deZdj usealor l gS j l qy Hks us
esai jr l gA t ho dekZ q k j t x r eav k r k g S v k\$
m h d s v u k j Qy Hks dj pykt k r k g A v d y k
v k r k g S v k\$ v d y k g h p y k t k r k g A t k b u l k u d e Z
d j r k g \$ m h d s v k k j i j t k r j v k q Fk Hks i r

gks gA

Tk l a k j eaukuk r Fk o s /; ut j v k r k g \$
m d s e w e a t h o d s d e Z g h g A , d l e; e a n k s
c k y d t l e y s s g \$ & , d j k t e g y e a n t w j k
> k s m h e a d k o z q e k u g s r k d k o z q g h u A d k o z
l k k u g h u g s r k d k o z H h l k k u k l s l E l u A d k o z
t l e l s g h l q k h g s r k d k o z t l e l s n k k % d "V o
i H k m B k j g k g A l j m k d h; g i d r; k c g q
f k k i n g \$ &

mks Dj eu d h x f r U k j h A
deZfr Bk sugha v s A

I l k a e a v l u r H k s ; k u ; k a d k t k y f c N k g A
u k y h e a i M k g o k d h m k i o z l e d s d e Z y H k s
j g k g A l a k j d s i k k h d e Z y d s H k s d s i j d
m k g j . k g A x h k d g r h g \$ & ^ d e Z k x g u k x f r ^
d e Z y d k j g l ; c M k x g u o f o f p = g A c M k c M k
_ f k e q h k k u h H h b l j g l ; d k l e > u g h d s
g A H k o k u J h d " . k d k v e j l a s k g \$ & ^
v o ' ; e s H k r Q s d r d e Z ' k k k k e & t k s d e Z
e s s f d ; k g S k d j j g k g A m d k v F N k c o k Q y
e q d k s g h i r g k s A i H q d h b l v V y
U k & Q o l F k e a d k o z { k i r r F k f l Q k j ' k u g h a
g A Q f d r v i u s g h c p s d e k l s u j d H k s r k g A

d k o z f d l h d k s L o x Z ; k u j d u g h a n s k g A Q f d r
v i u s d e Z s g h m B r k g S r F k v i u s d e Z s g h u m p s
f x j r k g A i H o p h v n k y r e a d k o z d h y j n y h y ; k
v i h y u g h a p y r h A m d h e k j e a v k o k t k u g h a
g k s A i j d d F k u g e s p s d j j g k g \$

d . k & d . k e a c l k i H k p \$ k j g k g A
p l g s k i d j k \$ p l g s q d j k A
d k o z m d h u t j l s c p u l d k

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
 शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
 आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

गुरुदेव! कुल चक्रवर्तिनः २०१३ ई.स. मकर संक्रान्ति के अवसर पर आपका आशीर्वाद प्राप्त हुआ।
 आपकी कृपा से हमारे आश्रम में रहने वाले बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार आया।
 आपकी कृपा से हमारे आश्रम में रहने वाले बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार आया।



महर्षि दयानन्द सन्यास आश्रम (Old Age Home)

वृद्ध माताओं को, जिनका कोई सहारा नहीं है, उनके लिए महर्षि दयानन्द बालआश्रम में रहने/ खाने/ व अन्य सुविधा देने की व्यवस्था की जा रही है जो वृद्ध माताएं बाल आश्रम में रहने की ईच्छुक हों वो कृप्या हमें सम्पर्क कर सकते हैं।

A/c No. : 32434144307
 Bank : SBI
 IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा,

नरेन्द्र गुप्ता

लेखराम (+91 7589219746)



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuék kZd s60 o"KZ



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर

कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहाँ उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Bangalore-22875216, Hyderabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalior-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163, Saharanpur-09412131021

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047
0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

ft u egkuekksuscky vk e dsfy, nku fn; k



Raksha Vohra



Deep Kumar
Sharma



Yash & Sangeeta Monga
Anish & Rebha, USA



Yashpal Vohra



Mr. & Mrs.
Surender Kumar



मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service



DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

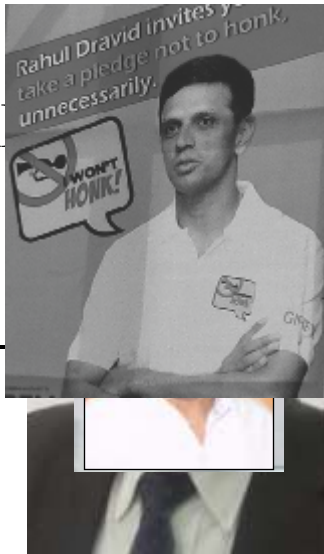
Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870

R A H U L D R A V I D

Our tributes to our father who while meeting parental obligations had the capacity to give time for the social causes and had an expanded vision of family. Perhaps that's why he lived a better life.

Rah
Dra
Invi

You To Take A Pledge



u l
v i d
t e s



Kaviraj Dr. B.N. Gupta (Sood)
1923-1999